Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 4, Issue 2 - 2019

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संबंध का तुलनात्मक अध्ययन

प्रेमचन्द्र यादव[1]

सारांश

अध्ययन का शीर्षक माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संबंध का तुलनात्मक अध्ययन है। अध्ययन के उद्देश्य में अभिभावक संबंध के 10 विमाओं जिसमें संरक्षित करना, सांकेतिक दंड, अस्वीकृति, प्रयोजन दंड, माँग, उदासीनता, सांकेतिक प्रतिफल, स्नेहपूर्ण व्यवहार, प्रयोजन प्रतिफल एवं नजरादांज में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन की परिकल्पना में शून्य परिकल्पना का निर्माण कर अध्ययन की सार्थकता को ज्ञात किया गया है। अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज़ जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों से 150 विद्यार्थियों एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों से 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। उपकरण के रूप में डॉ0 नलिनी राव द्वारा सृजित अभिभावक संबंध परीक्षण का प्रयोग किया गया है। अन्तर को ज्ञात करने के लिए टी-मान सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि शहरी विद्यार्थियों के अभिभावक संबंध की आयाम अभिभावक द्वारा संरक्षित करना, अभिभावक माँग, उदासीनता, सांकेतिक प्रतिफल, स्नेहपूर्ण व्यवहार, प्रयोजन प्रतिफल एवं पूर्ण अभिभावक संबंध ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षाकृत अधिक संबंध है। ग्रामीण विद्यार्थियों के अभिभावक संबंध की आयाम अभिभावक सांकेतिक दंड, अभिभावक अस्वीकृत, अभिभावक प्रयोजन दंड एवं अभिभावकों द्वारा नजरादांज शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षाकृत अधिक है।

की-वर्ड: माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, शहरी, ग्रामीण, अभिभावक संबंध, तुलना।

---

[*]शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र), शिक्षक-शिक्षा विभाग, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

भूमिका

छात्र की शिक्षा में अभिभावक का महत्त्वपूर्ण स्थान है; क्योंकि परिवार बच्चे की सबसे पहली शिक्षा संस्था है और उसकी माँ सबसे पहली शिक्षिका। माँ तथा परिवार का सीधा सम्बन्ध उस क्षेत्र से होता है, जहाँ पर वह निवास करते है। यदि अभिभावक ग्रामीण क्षेत्र का होगा तो छात्र को ग्रामीण आचरण की विधियाँ सीखता है। इसके विपरीत शहरी माता-पिता एवं अन्य सदस्य शहरी आचरण की विधियाँ सिखाते है। छात्र की सम्पूर्ण उपलब्धियों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक पृष्ठभूमि का महत्त्व होता है और अभिभावकों का इससे सीधा सम्बन्ध होता है। समाज की सबसे बड़ी विशेषता होती है- प्रेम, सहानुभूति और सहयोगपूर्ण वातावरण इस पर्यावरण में बच्चों का स्वाभाविक विकास होता हैं।

जर्मन शिक्षाशास्त्री पेस्टालॉजी के शब्दों में- ''गृह प्रेम और स्नेह का केन्द्र है, शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान है, और बच्चे का सर्वप्रथम विद्यालय है।''

ग्रामीण एवं शहरी अभिभावकों का कार्य व्यवहार छात्र को प्रभावित करता है। छात्र के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण भी उसे शैक्षिक वातावरण में समायोजित करने में सहायक होता है। अभिभावकों के द्वारा किये गये कार्य छात्र के संवेग को प्रभावित करते हैं। जिसका प्रभाव सीधे शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। अभिभावकों के मधुर सम्बन्ध छात्र की शैक्षिक प्रवृत्तियों को उत्प्रेरित करते हैं। ग्रामीण तथा शहरी समाज भी अलग-अलग होते हैं; जहाँ ग्रामीण समाज में अभिभावक या समाज छात्रों को उपयुक्त पुस्तकें, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियों, टेलीविजन का प्रबन्ध नहीं कर पाते, वहीं ये वस्तुएँ शहरी अभिभावक आसानी से उपलब्ध करा देते हैं, जिससे छात्र की बुद्धि को आवश्यक भोजन मिलता रहता है। अभिभावकों का परस्पर सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध छात्र की शैक्षिक अभिरूचि बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है।

चाहे वह ग्रामीण क्षेत्र का हो अथवा शहरी क्षेत्र का उपयुक्त वातावरण पाकर साधारण छात्र भी उन्नति कर सकता है। अवश्य ही मनुष्य को बनाने का तात्पर्य उत्तम पारिवारिक वातावरण में छात्र की उन्नति तथा समाज के साथ समायोजन की प्रक्रिया से है। अतः वातावरण का तात्पर्य उन सम्यक् परिस्थितियों से है जिनमें छात्र का वांछित विकास हो सके और जो कि उनके मन पर प्रभाव डालती है। छात्र समाज में रहकर बहुत कुछ सीखता है। जिस समाज में वह पैदा होता है और जिस समाज में उसका पालन-पोषण होता है वह उसी समाज तथा परिवार की भाषा, रहन-सहन और व्यवहार प्रतिमानों को सिखाता है। समाज उसके शारीरिक, मानसिक, नैतिक और चारित्रिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार के विकास में सहयोग प्रदान करता है। स्वीकार्य तथ्य है कि छात्र पर सामाजिक वातावरण का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। परन्तु प्रत्येक छात्र पर सामाजिक जीवन का प्रभाव एक सा नहीं होता है; क्योंकि हर एक छात्र की पारिवारिक परिस्थितियाँ, (ग्रामीण एवं शहरी दोनों में) एवं पारिवारिक सदस्यों के सम्बन्ध में विभिन्नताएँ पायी जाती हैं। जिससे अलग-अलग क्षेत्र के छात्रों पर उनसे सम्बन्धित वातावरण का भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है। यदि छात्र के आस-पास का वातावरण तनावग्रस्त व कलहपूर्ण है तो वह शिक्षा क्षेत्र में कुण्ठित हो जाता है। कुण्ठित व्यक्तित्व के साथ छात्र अपने समाज, विद्यालय में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता, वह अध्ययन में उचित

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

ध्यान नहीं दे पाता, जिससे उसका शैक्षिक विकास बाधित होता है।

पूर्व अध्ययनों में सिंह (2000) ने ‘‘परिणाम में पाया कि समायोजन के सभी प्रमुख क्षेत्रों परिवार, विद्यालय समाज एवं संवेग, में आत्म विश्वास की समर्थ भूमिका परिलक्षित हुई। सबिना (2010) ने इस अध्ययन के परिणाम न केवल यह संकेत देते हैं कि 9 साल की उम्र में बच्चों में आत्मविश्वास एक स्थिर निर्माण के रूप में मौजूद है। परिणाम उन कारकों की समझ को भी बढ़ाते हैं, जो बच्चों के संज्ञानात्मक और भविष्य के विकास और परिवार इकाई से अकादमिक परिणामों की भविष्यवाणी करते हैं। यह ज्ञान शिक्षकों, मनोवैज्ञानिकों और माता-पिता को समान रूप से एक महान वादा प्रदान करता है, जो उन्हें अपने शैक्षिक परिणामों में सुधार करने के लिए एक व्यापक उद्देश्य के साथ बच्चों की निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ावा देने की क्षमता प्रदान करता है। राय, नीति (2012) ने निष्कर्ष में पाया कि शहरी परिवेश में रहने वाले किशोरों का समायोजन स्तर ग्रामीण परिवेश में रहने वाले किशोरों की तुलना में अधिक सन्तोषजनक होता है। परिवेशीय सूचनाओं की समृद्धता उनके समायोजन कौशलों को विकसित करने में अहम् भूमिका निभाती है। मूलयादी, सेतो एवं अन्य (2016) ने अध्ययन के परिणाम से पता चलता है कि अभिभावक-बच्चे के संबंध का अकादमिक तनाव या शैक्षणिक आत्म-प्रभावकारिता पर कोई सीधा प्रभाव नहीं पड़ता है। माता-पिता के बच्चे के संबंध, आत्म-सम्मान, और शैक्षणिक आत्मनिर्भरता छात्रों के शैक्षणिक तनाव को घर में रखने के लिए अच्छे भविष्यवक्ता हैं। लेकिन अभिभावक-बच्चे का संबंध केवल छात्रों के शैक्षणिक तनाव को आत्म-सम्मान के माध्यम से प्रभावित करता है और अकादमिक आत्म-निर्भरता के माध्यम से अकादमिक तनाव को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं है। इस बिंदु पर, माता-पिता घरेलू अकादमिक गतिविधियों से संबंधित सकारात्मक आत्म-सम्मान का निर्माण करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अतः प्राप्त अध्ययनों से ज्ञात होता है कि अभिभावक संबंध का विद्यार्थियों पर सीधा एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और उनके शिक्षा में सकारात्मक के साथ-साथ उनके जीवन पर भी प्रभाव डालता है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संबंध का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संबंध की तुलना करना।
2. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संरक्षित संबंध की तुलना करना।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक दंड की तुलना करना।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक अस्वीकृति सम्बन्ध की तुलना करना।
5. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन दंड की तुलना करना।
6. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक माँग सम्बन्ध की तुलना करना।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

7. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक उदासीनता सम्बन्ध की तुलना करना।
8. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक प्रतिफल सम्बन्ध की तुलना करना।
9. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक स्नेहपूर्ण व्यवहार की तुलना करना।
10. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन प्रतिफल की तुलना करना।
11. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक नजरादांज की तुलना करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संबंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संरक्षित संबंध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक दंड में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक अस्वीकृति सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन दंड में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक माँग सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक उदासीनता सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक प्रतिफल सम्बन्ध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक स्नेहपूर्ण व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन प्रतिफल में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
11. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक नजरादांज में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध-प्रविधि

वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज़ जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों से 150 विद्यार्थियों एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों से 150 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। उपकरण के रूप में डॉ0 नलिनी राव द्वारा सृजित अभिभावक संबंध परीक्षण का प्रयोग किया गया है। अन्तर को ज्ञात करने के लिए टी-मान सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संबंध की तुलना करना-

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

H_{01} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संबंध में अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0 1

क्षेत्र	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (σ_D)	टी-परीक्षण मान (t-value)
शहरी	150	533.35	35.46	20.66	2.78	7.43*
ग्रामीण	150	512.69	32.66			

*0.05 स्तर पर सार्थक

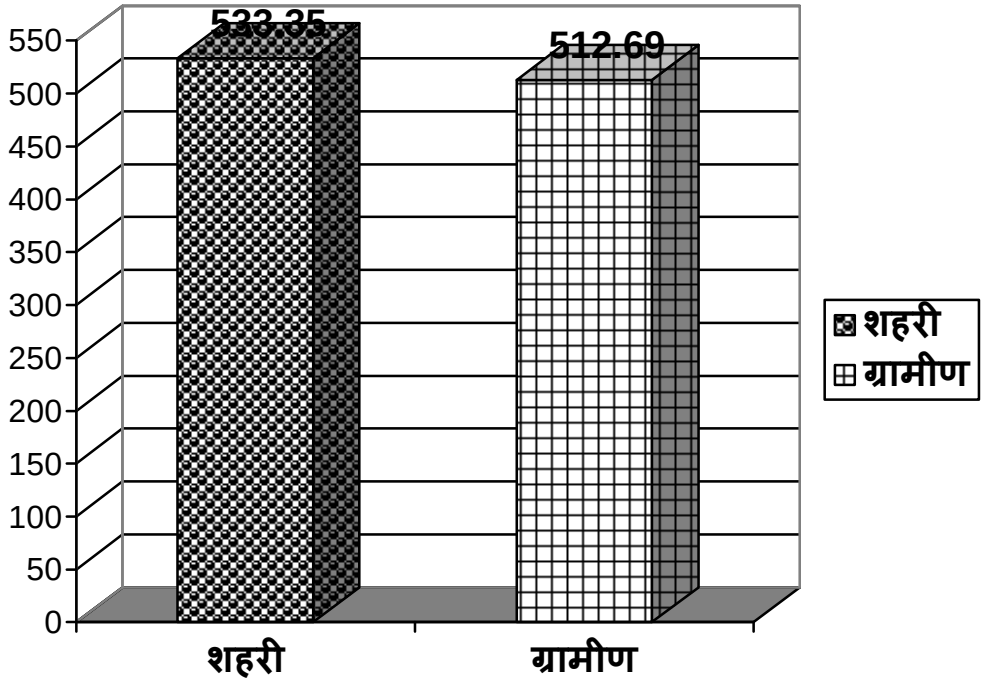

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संबंध वितरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर का टी-परीक्षण मान 7.43 है जो कि निर्धारित मान 1.97 से अधिक है। अतः हम अपने शून्य उपकल्पना को अस्वीकृत करते हुए यह कह सकते है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संबंध के दो समूहों के माध्यमों के बीच अंतर स्वीकार्य है।

2. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संरक्षित संबंध की तुलना करना-

H_{02} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संरक्षित संबंध में अन्तर नहीं है।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

सारिणी सं0 2

क्षेत्र	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (σ_D)	टी-परीक्षण मान (t-value)
शहरी	150	58.78	7.14	6.59	0.59	11.17*
ग्रामीण	150	52.19	7.19			

*0.05 स्तर पर सार्थक

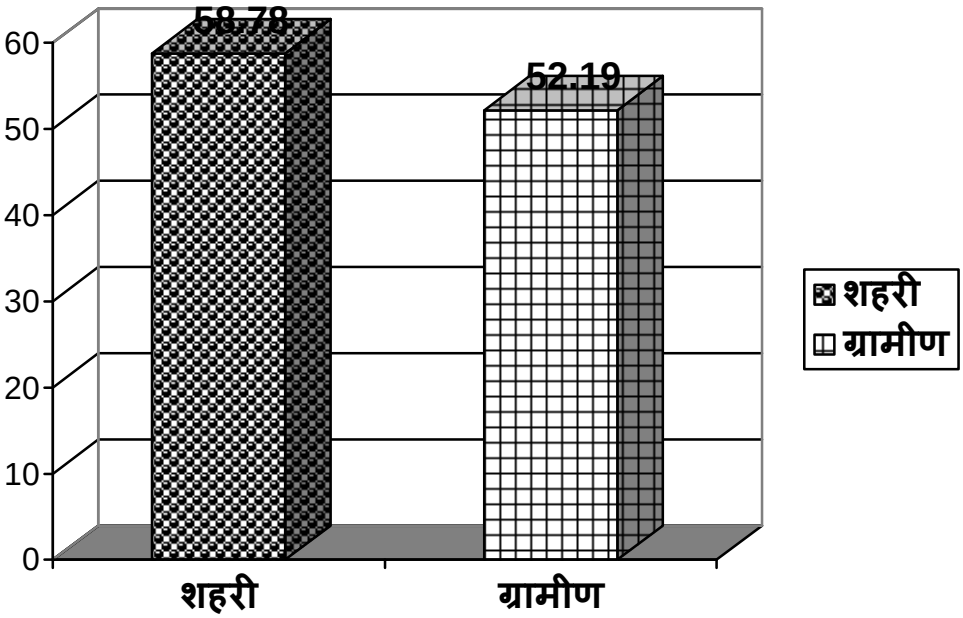

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संरक्षित वितरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर का टी-परीक्षण मान 11.17 है जो कि निर्धारित मान 1.97 से अधिक है। अतः हम अपने शून्य उपकल्पना को अस्वीकृत करते हुए यह कह सकते है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक संरक्षित के दो समूहों के माध्यमों के बीच अंतर स्वीकार्य है।

3. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक दंड की तुलना करना-

H_{03} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक दंड में अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0 3

क्षेत्र	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (σ_D)	टी-परीक्षण मान (t-value)
शहरी	150	39.88	7.84	6.13	0.61	10.04*
ग्रामीण	150	46.01	7.19			

*0.05 स्तर पर सार्थक

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

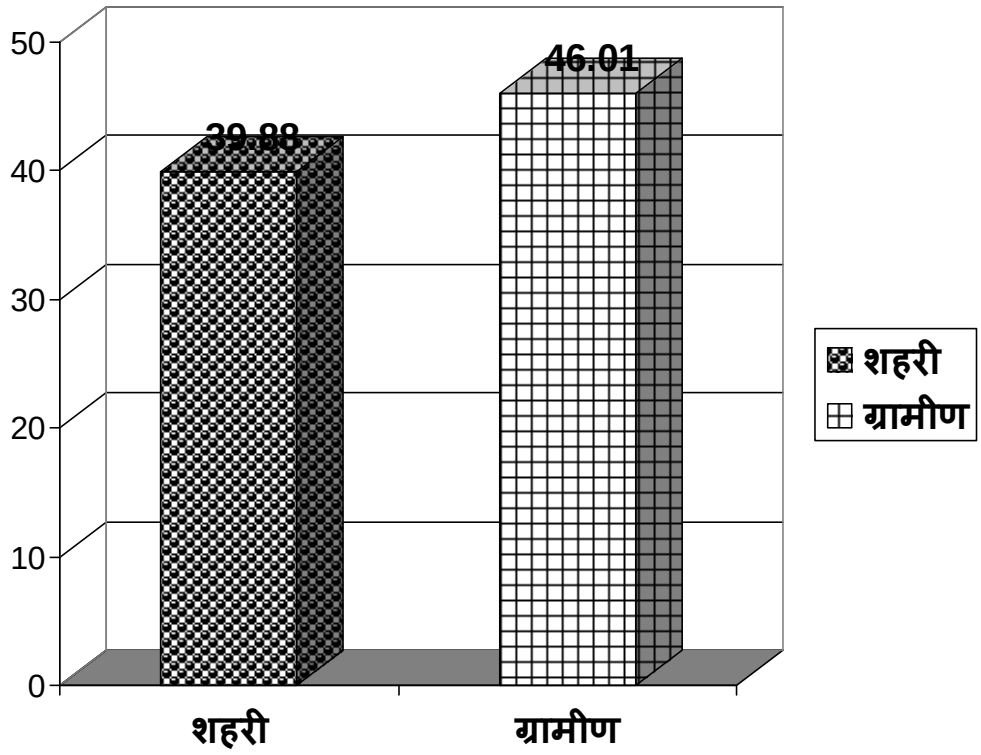

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक दण्ड वितरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर का टी-परीक्षण मान 10.04 है जो कि निर्धारित मान 1.97 से अधिक है। अतः हम अपने शून्य उपकल्पना को अस्वीकृत करते हुए यह कह सकते है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक दंड के दो समूहों के माध्यमों के बीच अंतर स्वीकार्य है।

4. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक अस्वीकृति सम्बन्ध की तुलना करना-

H_{04} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक अस्वीकृति सम्बन्ध में अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0 4

क्षेत्र	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (σ_D)	टी-परीक्षण मान (t-value)
शहरी	150	41.24	7.12	4.34	0.56	7.75*
ग्रामीण	150	45.58	6.69			

*0.05 स्तर पर सार्थक

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

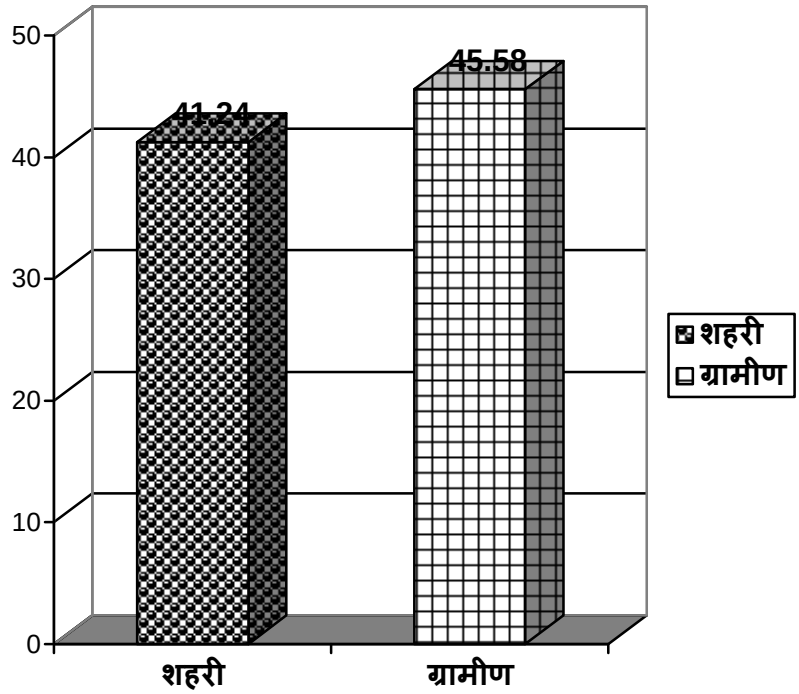

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक अस्वीकृति वितरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर का टी-परीक्षण मान 7.75 है जो कि निर्धारित मान 1.97 से अधिक है। अतः हम अपने शून्य उपकल्पना को अस्वीकृत करते हुए यह कह सकते है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक अस्वीकृति के दो समूहों के माध्यमों के बीच अंतर स्वीकार्य है।

5. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन दंड की तुलना करना-

H_{05} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन दंड में अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0 5

क्षेत्र	**न्यादर्श की संख्या**	**मध्यमान (M)**	**प्रमाणिक विचलन (SD)**	**मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)**	**मानक त्रुटि (σ_D)**	**टी-परीक्षण मान (t-value)**
शहरी	150	41.91	6.97	3.48	0.58	6.00*
ग्रामीण	150	45.39	7.15			

*0.05 स्तर पर सार्थक

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

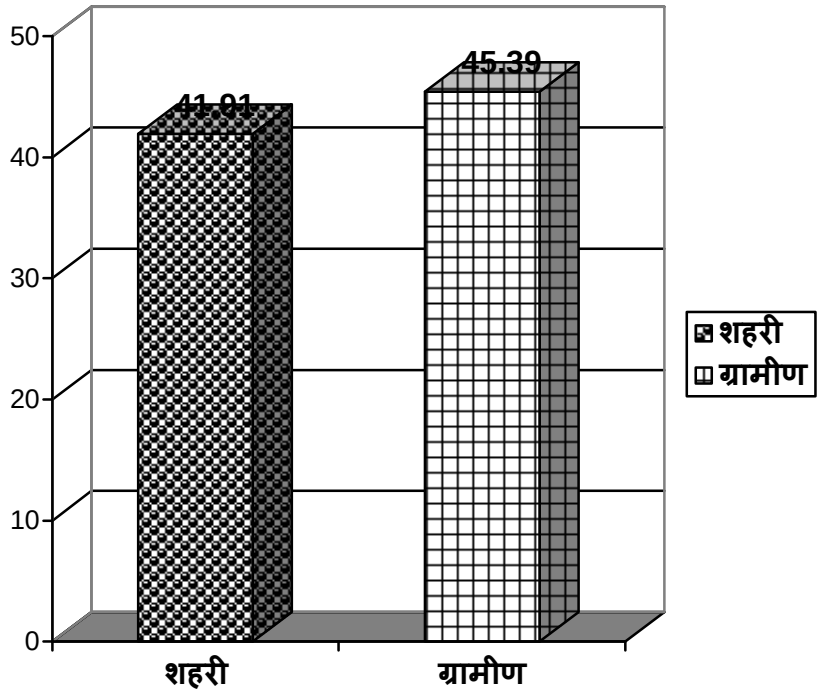

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन दंड वितरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर का टी-परीक्षण मान 6.00 है जो कि निर्धारित मान 1.97 से अधिक है। अतः हम अपने शून्य उपकल्पना को अस्वीकृत करते हुए यह कह सकते है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन दंड के दो समूहों के माध्यमों के बीच अंतर स्वीकार्य है।

6. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक माँग सम्बन्ध की तुलना करना-

H_{06} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक माँग सम्बन्ध में अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0 6

क्षेत्र	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (σ_D)	टी-परीक्षण मान (t-value)
शहरी	150	41.91	6.97	3.48	0.58	6.00*
ग्रामीण	150	45.39	7.15			

*0.05 स्तर पर सार्थक

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

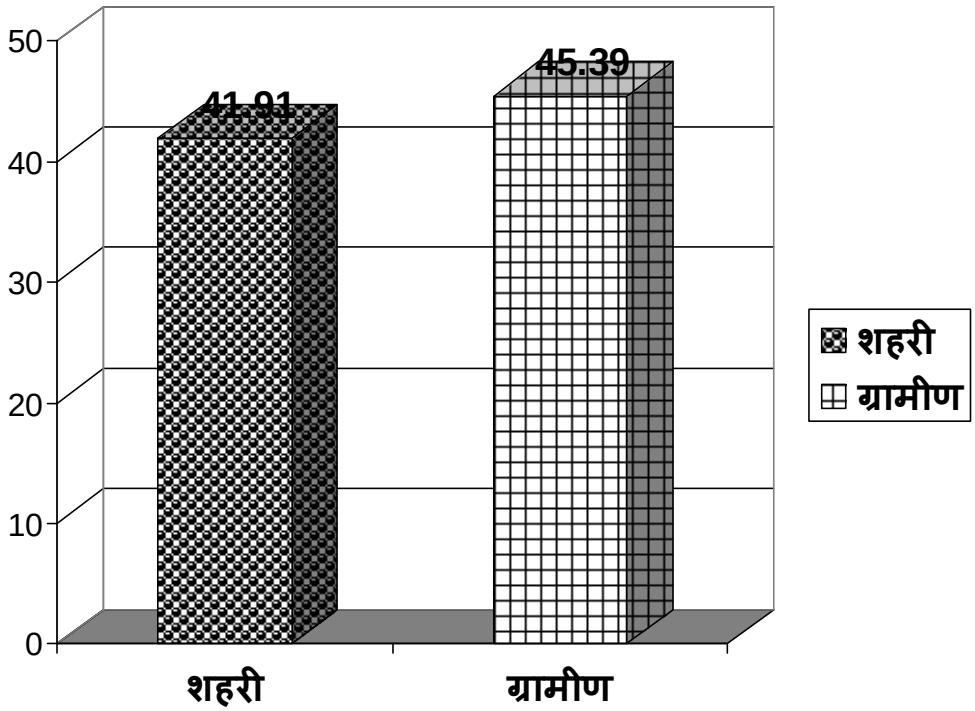

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक माँग वितरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर का टी-परीक्षण मान 6.88 है जो कि निर्धारित मान 1.97 से अधिक है। अतः हम अपने शून्य उपकल्पना को अस्वीकृत करते हुए यह कह सकते है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक माँग के दो समूहों के माध्यमों के बीच अंतर स्वीकार्य है।

7. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक उदासीनता सम्बन्ध की तुलना करना-

H_{07} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक उदासीनता सम्बन्ध में अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0 7

क्षेत्र	**न्यादर्श की संख्या**	**मध्यमान (M)**	**प्रमाणिक विचलन (SD)**	**मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)**	**मानक त्रुटि (σ_D)**	**टी-परीक्षण मान (t-value)**
शहरी	150	63.17	6.58	4.62	0.57	8.11*
ग्रामीण	150	59.15	7.28			

*0.05 स्तर पर सार्थक

© *Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.* **ISSN: 2581-3501**

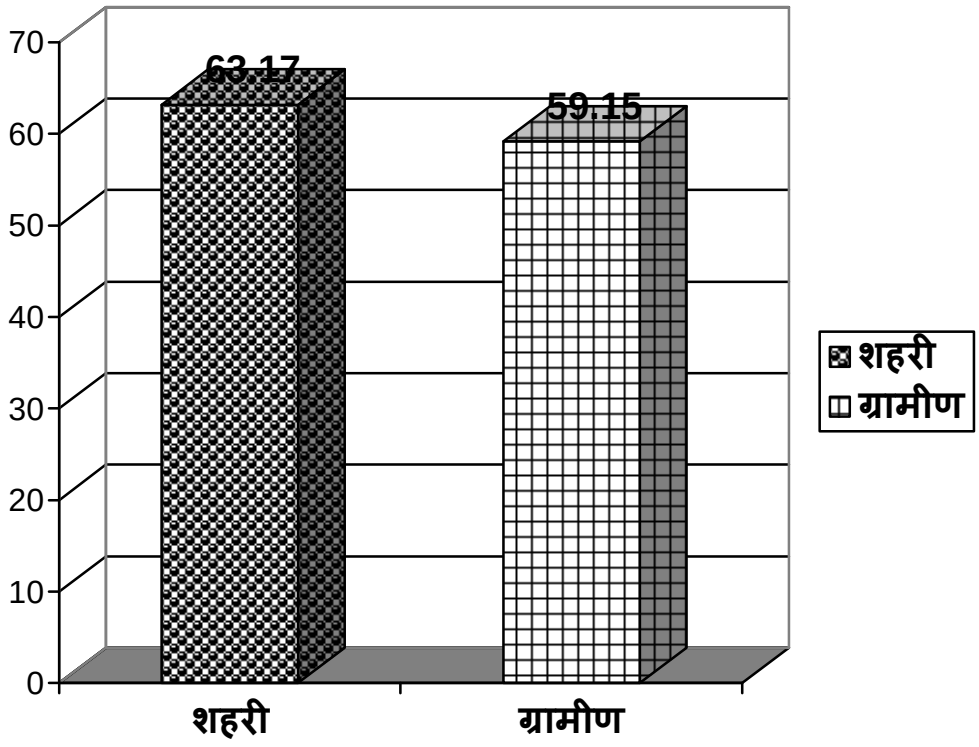

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक उदासीनता वितरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर का टी-परीक्षण मान 8.11 है जो कि निर्धारित मान 1.97 से अधिक है। अतः हम अपने शून्य उपकल्पना को अस्वीकृत करते हुए यह कह सकते है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक उदासीनता के दो समूहों के माध्यमों के बीच अंतर स्वीकार्य है।

8. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक प्रतिफल सम्बन्ध की तुलना करना-

H_{08} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक प्रतिफल सम्बन्ध में अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0 8

क्षेत्र	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (σ_D)	टी-परीक्षण मान (t-value)
शहरी	150	61.03	6.51	3.70	0.55	6.73*
ग्रामीण	150	57.33	6.84			

*0.05 स्तर पर सार्थक

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

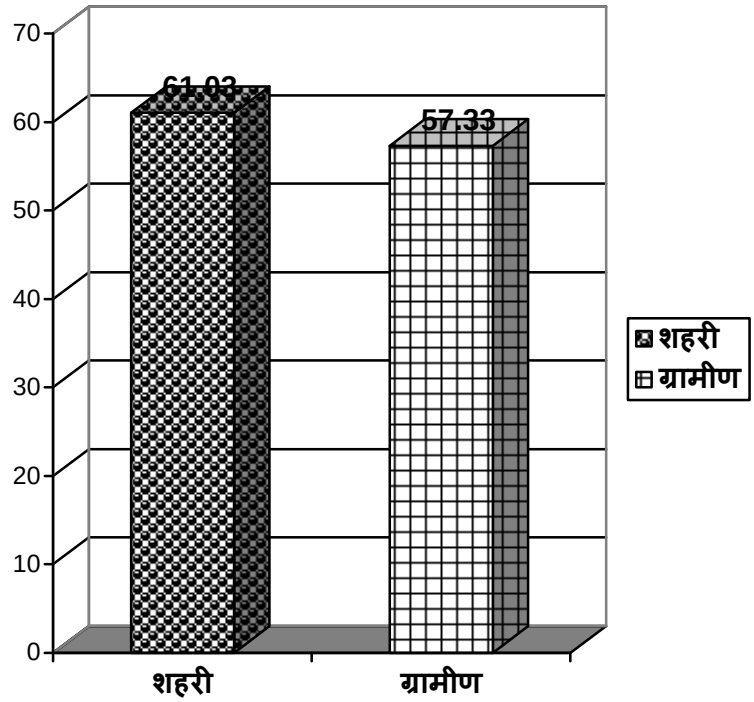

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक प्रतिफल वितरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर का टी-परीक्षण मान 6.73 है जो कि निर्धारित मान 1.97 से अधिक है। अतः हम अपने शून्य उपकल्पना को अस्वीकृत करते हुए यह कह सकते है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक सांकेतिक प्रतिफल के दो समूहों के माध्यमों के बीच अंतर स्वीकार्य है।

9. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक स्नेहपूर्ण व्यवहार की तुलना करना-

H_{09} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक स्नेहपूर्ण व्यवहार सम्बन्ध में अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0 9

क्षेत्र	**न्यादर्श की संख्या**	**मध्यमान (M)**	**प्रमाणिक विचलन (SD)**	**मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)**	**मानक त्रुटि (σ_D)**	**टी-परीक्षण मान (t-value)**
शहरी	150	61.03	6.51	3.70	0.55	6.73*
ग्रामीण	150	57.33	6.84			

*0.05 स्तर पर सार्थक

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

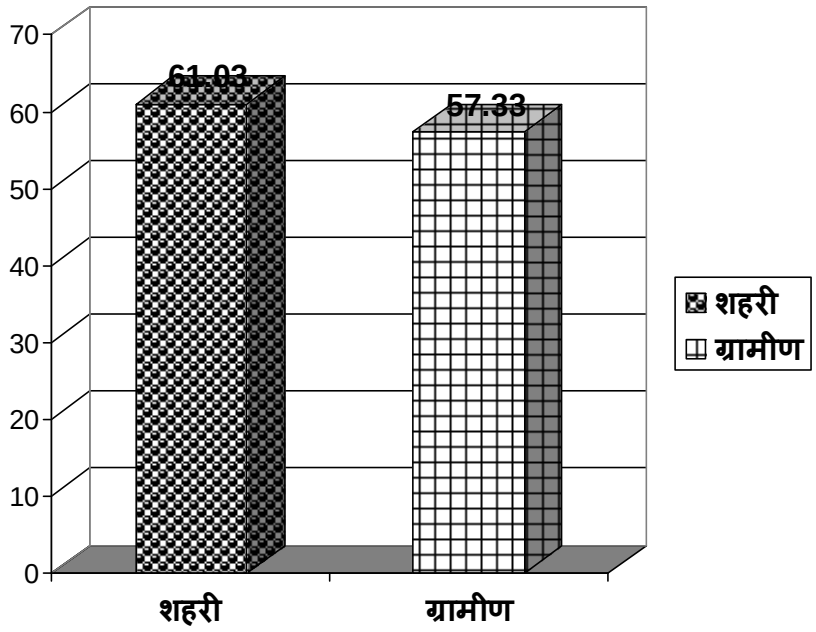

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक स्नेहपूर्ण व्यवहार वितरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर का टी-परीक्षण मान 8.40 है जो कि निर्धारित मान 1.97 से अधिक है। अतः हम अपने शून्य उपकल्पना को अस्वीकृत करते हुए यह कह सकते है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक स्नेहपूर्ण व्यवहार के दो समूहों के माध्यमों के बीच अंतर स्वीकार्य है।

10. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन प्रतिफल की तुलना करना-

H_{010} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन प्रतिफल में अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0 10

क्षेत्र	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (σ_D)	टी-परीक्षण मान (t-value)
शहरी	150	58.24	6.57	4.14	0.56	7.39*
ग्रामीण	150	54.10	7.10			

*0.05 स्तर पर सार्थक

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

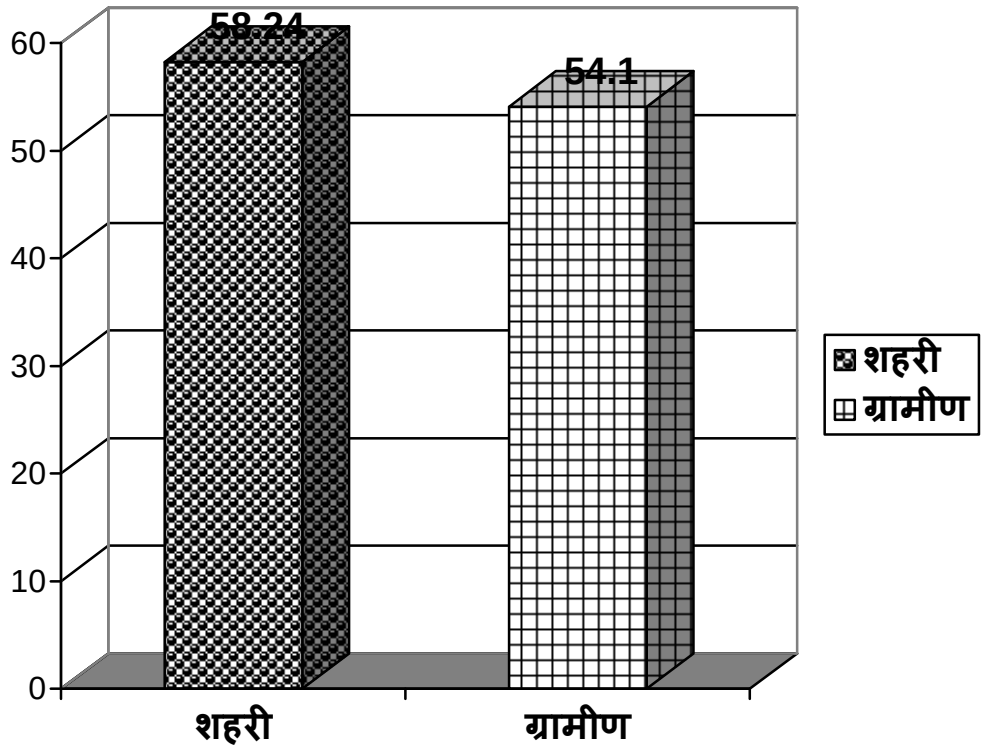

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन प्रतिफल वितरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर का टी-परीक्षण मान 7.39 है जो कि निर्धारित मान 1.97 से अधिक है। अतः हम अपने शून्य उपकल्पना को अस्वीकृत करते हुए यह कह सकते है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक प्रयोजन प्रतिफल के दो समूहों के माध्यमों के बीच अंतर स्वीकार्य है।

11. माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक नजरादांज की तुलना करना-

H_{011} माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक नजरादांज में अन्तर नहीं है।

सारिणी सं0 11

क्षेत्र	न्यादर्श की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M_1~M_2)	मानक त्रुटि (σ_D)	टी-परीक्षण मान (t-value)
शहरी	150	40.30	6.79	3.54	0.55	6.44*
ग्रामीण	150	43.84	6.58			

*0.05 स्तर पर सार्थक

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

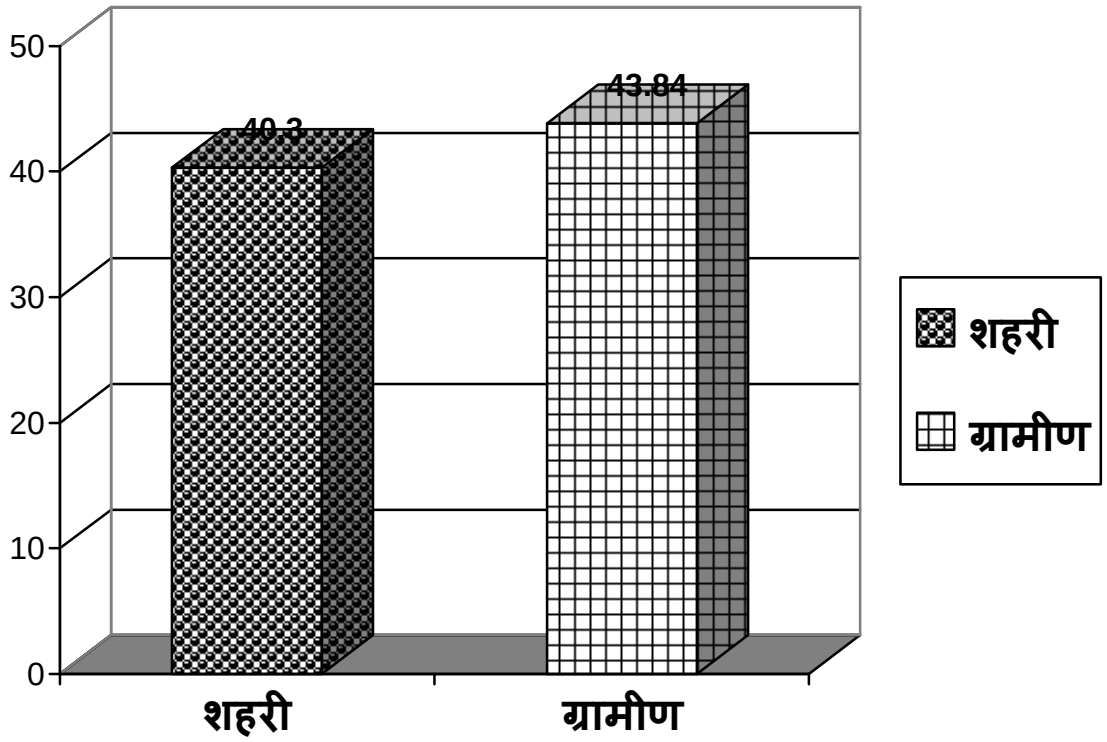

माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक नजरादांज वितरण संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तर का टी-परीक्षण मान 6.44 है जो कि निर्धारित मान 1.97 से अधिक है। अतः हम अपने शून्य उपकल्पना को अस्वीकृत करते हुए यह कह सकते है कि माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अभिभावक नजरादांज के दो समूहों के माध्यमों के बीच अंतर स्वीकार्य है।

निष्कर्ष

- शहरी विद्यार्थियों के अभिभावक संबंध की आयाम अभिभावक द्वारा संरक्षित करना, अभिभावक माँग, उदासीनता, सांकेतिक प्रतिफल, स्नेहपूर्ण व्यवहार, प्रयोजन प्रतिफल एवं पूर्ण अभिभावक संबंध ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षाकृत अधिक संबंध है।
- ग्रामीण विद्यार्थियों के अभिभावक संबंध की आयाम अभिभावक सांकेतिक दंड, अभिभावक अस्वीकृत, अभिभावक प्रयोजन दंड एवं अभिभावकों द्वारा नजरादांज शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षाकृत अधिक है।

सुझाव

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के अभिभावक संबंध में अंतर यह दर्शाता है कि बच्चों की शिक्षा के लिए अभिभावक संबंध के साथ-साथ सबसे बड़ा योगदान आर्थिक स्थिति का होता है। जहाँ एक तरफ शहरी क्षेत्र के लोगों में व्यवसाय, नौकरी एवं अन्य कार्यों के साथ-साथ बच्चों के संबंध पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है वहीं ग्रामीण क्षेत्र के लोगों की आर्थिक स्थिति दयनीय एवं ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक स्थिति अधिक होने पर भी वहाँ की पारिवारिक स्थिति ऐसी होती है जिससे वे बच्चों के साथ अधिक सामंजस्य नहीं बना पाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में अभिभावकों की शिक्षा से वंचित के साथ-साथ कृषि एवं मजदूरी में संलिप्त होने पर वे अपने बच्चों के साथ संबंध उचित पूर्ण नहीं बना

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

पाते हैं एवं उनकी इच्छाओं एवं माँग संबंधी चीजों को नकार देते हैं तथा साथ ही साथ ग्रामीण बच्चों को अपने अभिभावक के साथ कृषि एवं मजदूरी जैसे क्षेत्रों में हाथ बँटाना पड़ता है जिससे वे अपने अभिभावक के साथ संबंध बनाने में शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की तुलना में कम पाये गये। वहीं शहरी क्षेत्र के अभिभावकों द्वारा अपनी आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को देखते हुए वे अपने बच्चों को अपने से और अधिक आगे ले जाने की कोशिश करते हैं तथा उनको संरक्षित करने के साथ-साथ उनकी माँगों एवं उन्हें पुरस्कृत करते रहते हैं जिससे उनकी शिक्षा के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व विकास में रूकावट पैदा न हो और वे शिक्षित होकर नौकरी पेशा में संलग्न हो सके। ग्रामीण क्षेत्र सामाजिक होने के कारण लोगों द्वारा अपने बच्चों को संस्कार एवं मूल्य जैसी बातों पर विशेष ध्यान दिया जाता है जिससे वे अपने बच्चों को हमेशा डाँटते एवं फटकारते रहे हैं वहीं शहरी क्षेत्रों में लोगों द्वारा सामाजिक बंधनों से दूर होते जा रहे हैं एवं अपनी आर्थिक स्थिति पर विशेष ध्यान देने के कारण वे अपने बच्चों के साथ अच्छा संबंध स्थापित कर लेते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. अंकुर सिंह-''किशोर छात्र-छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति एवं समायोजन में उनके आत्मविश्वास की भूमिका'' पी-एच.डी. सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय. कानपुर, 2000.
2. सबिना (2010). सेल्फ-कॉन्फीडेन्स एण्ड एकेडमिक एचिवमेण्ट इन प्राइमरी-स्कूल चिल्ड्रेन: देयर रिलेशनशिप एण्ड लिंक्स टू पैरेन्टल बॉण्ड, इन्टेलिजेन्स, ऐज एण्ड जेण्डर, रिसर्चगेट, https://www.researchgate.net/publication/225877697.
3. राय, नीति (2012). सामाजिक वंचन से ग्रस्त किशोरों और सामान्य किशोरों के पैतृक सम्बन्ध, समायोजन स्तर और आक्रामकता का अध्ययन, शोध प्रबन्ध (मनोविज्ञान), वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, www.shodhganga.inflibnet.ac.in.
4. मूलयादी, सेतो एवं अन्य (2016). द रोल ऑफ पैरेन्ट-चाइल्ड रिलेशनशिप, सेल्फ-स्टीम, एकेडमिक सेल्फ-इफीकेसी टू एकेडमिक स्ट्रेस, प्रोसिडिया-सोशल एण्ड बिहैविरल साइंसेस, 217 (2016), 603-608.

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501